(Q.) बिहार के बाढ़ के कारणों एवं प्रभावों पर प्रकाश डालिए।

Ans => देश के सबसे अधिक बाढ़ प्रभावित क्षेत्र उत्तरी और उत्तरी पूर्वी भाग हैं जहाँ की नदियाँ देश के 60% जल को प्रवाहित करती है। कुल वार्षिक वर्षा का 75% भाग जून से सितम्बर के चार महीनों में होती है। मैदान की ढाल प्रवणता कम होने के कारण और नदियों द्वारा भारी मात्रा में तलछटों के ढोने से नदियों के निचले भाग में काफी पानी फैल जाता है। गंगा के मैदान में भूमि की ढाल अत्यंत मंद है। हिमालय से भारी मात्रा में जल लेकर आनेवाली नदियों में भयंकर बाढ़ आती है। राष्ट्रीय बाढ़ आयोग के अनुसार पुरे देश में लगभग 4 करोड़ हेक्टेयर भूमि बाढ़ से प्रभावित होती है तथा औसत तौर पर 37 लाख हेक्टेयर भूमि की फसलें बाढ़ से नष्ट हो जाती है। जनसंख्या का तीव्र वृद्धि, वनों की अन्धाधुन्ध कटाई, बसाव क्षेत्र में वृद्धि तथा बाढ़ के मैदान में सड़कों का निर्माण अधिक बाढ़ आने का प्रमुख कारण है।

गंगा के मैदान में स्थित बिहार एक बाढ़ प्रभावित राज्य है जिसके 38 में से 24 जिलें और कुल 533 सामुदायिक विकास खण्डो में से 119 प्रखंड प्रतिवर्ष वर्षाकाल में बाढ़ से प्रभावित होता है। बाढ़ के कारण लाखों हेक्टेयर भूमि के फसलें नष्ट हो जाती है। हजारों मकान ध्वस्त हो जाती है। और बड़ी संख्या में मानव तथा पशु अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते है। सरकारी आंकड़ो के

2020-7-28 14:

अनुसार वर्ष 2003 में 42.45 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हुए थे 3.25 लाख हेक्टेयर भूमि के फसल नष्ट हो गया था। 15,986 मकान ध्वस्त हो गए और 200 मनुष्य तथा 108 पशु मारे गए थे बाढ़ के समय जो लोग पानी में घिरे होते है, उनके बीच भोजन, कपड़ा और दवाओं की आपूर्ति भी एक बड़ी समस्या बन जाती है।

* => बाढ़ प्रभावित क्षेत्र :— गंगा बेसिन में स्थित बिहार राज्य एक बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है। गंगा बेसिन के अंतर्गत 23 नदी प्रणालियाँ है। बिहार में प्रति वर्ष 15 लाख हेक्टेयर भूमि और 76 लाख जनसंख्या बाढ़ से प्रभावित होती है। लगभग 96 करोड़ 34 लाख रुपये की क्षति होती है।

उत्तर बिहार में गंगा के बेसिन में 6 उपबेसिन है। पश्चिम से पूरब इनका नाम है घाघरा, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमति, अधवारा समूह, कमला-बलान, कोसी और महानन्दा। दक्षिण बिहार में गंगा के तटबंध से दक्षिण एक पूरब-पश्चिम लम्बा भाग बाढ़ से प्रभावित होता है। इस क्षेत्र में बाढ़ लानेवाली प्रमुख नदियाँ है— सोन, पुनपुन, फल्गु, मोहाने, सकरी, कियुल, बडुआ और चँदन। गंगा के दक्षिणी तटबंध ऊँचा है जिसके कारण दक्षिणी पठार से आने वाली नदियों का जल सीधे गंगा में नहीं मिलती है। जिससे ढाल क्षेत्र जल मग्न हो जाती है। ढाल और दियारा क्षेत्रों में नियति बाढ़ आती रहती है।

2020-7-28 14:1

* बाढ़ आने के कारण :- विश्व के अन्य भागों की तरह बिहार में भी बाढ़ की विभीषिका के दो कारण हैं- जलवायु और धरातल की विशेषताएँ। इनके अलावा वनों का बड़े पैमाने पर कटाव, नदी का धाराओं का मार्ग परिवर्तन और मानव द्वारा प्राकृतिक प्रवाह प्रणाली के साथ छेड़-छाड़ बाढ़ आने का अन्य कारण है।

बिहार में मानसूनी जलवायु मिलती है। इस जलवायु में अधिकतर वर्षा वर्ष के चार महीनों में ही प्राप्त हो जाती है। उत्तरी बिहार तथा नेपाल में 150-200cm वर्षा मानसून काल में होती है। इस मौसम में नदियों में जल का मात्रा इतना अधिक बढ़ जाती है कि तटबंध टूट जाती है तथा आस-पास के क्षेत्र जल मग्न हो जाती है।

बिहार में गंगा के मैदान का औसत ढाल 6cm/km है। उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में छोटा नागपुर के पठार से आने वाली नदियाँ बहुत पैमाने पर तलछट का निक्षेप करती है जिससे नदी की तली ऊँची हो जाती है। जल की मात्रा अधिक होने पर प्राकृतिक कगार या मानव निर्मित तटबंध टूट जाती है। उत्तर बिहार में नदियों के दोनों तरफ तश्तरीनुमा छिछले गड्ढे पाये जाते है जिन्हे स्थानीय भाषा में चौर कहा जाता है। उत्तर बिहार की सभी नदियाँ हिमालय से निकलती है। कोसी नदी का जल ग्रहण क्षेत्र बहुत बड़ा है जो नेपाल से उत्तर तिब्बत के बड़े भाग में विस्तृत है। पर्वतीय भाग से वन कटाई के कारण जल एवं तलछट दोनों

की मात्रा में अद्भूत वृद्धि हुआ है इसके कारण नदियाँ अपने मार्ग को बार-बार परिवर्तन करते रहते है। कोसी नदी द्वारा किए गए बालू के निक्षेप अररिया और पूर्णिया जिलों में वृहत पैमाणे पर देखा जाता है नदी की बदलती धारा के कारण भयंकर बाढ आती है। इसी कारण कोसी को बिहार का शोक कहा जाता है।

दक्षिणी बिहार में भी छोटानागपुर के वनों के विनाश के कारण तेजी से नदियों में जल की मात्रा बढ़ जाती है। गंगा नदी के दक्षिणी से आनेवाली नदियाँ जैसे - सोहाने, फल्गु, पैम, स्पनरी और किवुल का जल एक बड़े क्षेत्र में फैल जाता है यह क्षेत्र टाल कहलाता है। बदुआ और चानन नदियों का जल भी बांका और भागलपुर जिलों में बड़े पैमाने पर बाढ लाता है

* => <u>बाढ से होनेवाली क्षति</u>:-

भारत मे प्रत्येक वर्ष किसी न किसी भाग में बाढ़ आती है जिससे करोड़ों रुपयों की क्षति होती है और लाखों लोग आपदा का शिकार होते हैं किसी भी क्षेत्र विशेष में बाढ़ से कितनी क्षति होगी यह इस बात पर निर्भर करती है कि उस क्षेत्र में जनसंख्या का घनत्व कितना है, बाढ़ के आने का समय क्या है, वहाँ की धरातल कैसी है, वहाँ किस हद तक

विनाश हुआ है और वहाँ कौन - सी नदी बेसिन आस - पास स्थित है। यू. एन. डी. पी. के आपदा संकट प्रबंधन कार्यक्रम के एक रिपोर्ट के अनुसार पुरे भारत में 4 करोड़ हेक्टेयर भूमि बाढ़ से प्रभावित है उसमें 17% भूमि सिर्फ बिहार राज्य में है। 1987 में सिंचाई विभाग, बिहार सरकार के आंकड़े के अनुसार इस बाढ़ से कुल क्षति 1212 करोड़ रुपया की हुई थी। वर्ष 1987 और 2003 में हुई क्षति का ब्यौरा निम्नांकित है—

क्रमांक	मद	1987 के बाढ़ से हुई क्षति (लाख में)	2003 के बाढ़ से हुई क्षति (लाख में)
1	2	3	4
1.	बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र (लाख हेक्टेयर)	47.60	15.083
2.	प्रभावित जनसंख्या (लाख)	256.70	76.02
3.	फसलों की क्षति क्षेत्रफल (लाख हेक्टेयर में) मूल्य (लाख में)	25.70	6.102
4.	घरों की क्षति संख्या (सं. लाख) मूल्य लाख	58100.00 17	6566.15 0.45262
5.	बाढ़ से मृत जानवर की सं.	25800.00	2032.10 108
6.	बाढ़ से मृत मनुष्यों की सं.	5302 1283	251
7.	सार्वजनिक सम्पत्ति की क्षति (लाख में)	3720400	1355.00
	लाख रुपया	121200.00	9633.50

स्रोत सिंचाई विभाग, बिहार सरकार 1987 एवं गंगा बाढ़ नियंत्रण आयोग पटना (2003)

2020-7-28 14:26

(i) फसलों की क्षति :- बाढ़ आने से सबसे अधिक नुकसान खड़ी फसलों से होता है 1987 के बाद में 25 लाख हेक्टेयर भूमि में खड़ी फसलों की क्षति हुई थी वर्ष 2003 में 6 लाख हेक्टेयर भूमि में खड़ी फसलों की क्षति हुई है जिसका मूल्य 65.66 करोड़ रुपये थे। कुछ जिलों में फसलों का नुकसान अधिक था जबकि कुछ अन्य जिलों में फसलों का नुकसान अधिक था जबकि कुछ अन्य जिलों में फसलों का नुकसान कम था। वैशाली, समस्तीपुर, सहरसा, कटिहार और भागलपुर जिलों में से प्रत्येक में 0.50 से 1.338 लाख हेक्टेयर फसली भूमि का नुकसान हुआ। मुजफ्फरपुर, पूर्वी चम्पारण, बेगूसराय और भोजपुर जिलों में फसलों की क्षति 0.20 - 0.50 लाख हेक्टेयर भूमि पर हुई। क्षति का आकलन जब रुपया में किया गया तो पश्चिमी चम्पारण, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, कटिहार और भागलपुर जिलों में अधिकतम क्षति हुई। बाढ़ का पानी कई सप्ताह खेतों में जमा रहता है जिससे फसलें नष्ट हो जाती है।

(ii) घरों की क्षति :- बिहार भारत के सबसे गरीब और पिछड़े राज्यों में से एक है यहाँ की 42% आबादी गरीबी रेखा से नीचे रहती है। कुल जनसंख्या का 90% भाग गाँवों में निवास करती है। इनकी घरों

2020-7-28 14:

की दिवार मिट्टी की और छावनी फूस या खपरैल की होती है। कुछ दिन बाद के पानी जमा रहने से दीवार ध्वस्त हो जाती है और छतों को पानी बहा ले जाती है। बाढ़ के समय बहुत से लोग अपने घर को छोड़ सड़कों या ऊँचे टीलों पर आश्रय लेते हैं। बाढ़ के पानी उतर जाने के बाद लोग गाँव में पुनः वापस चले आते हैं मगर गरीबी के कारण वे अपना घर नही बना पाते हैं। वर्ष 1987 की बाढ़ में 17 लाख घर नष्ट हो गये थे। वर्ष 2003 में कुल 45,262 घर नष्ट हो गये जिनकी लागत 20 करोड़ रुपया से ज्यादा था। सबसे अधिक घरों की क्षति पश्चिमी चम्पारण, कटिहार, भागलपुर, पटना, भोजपुर, अररिया और समस्तीपुर जिलों में हुई। इन जिलों में से प्रत्येक में 2000 से 8000 तक घर बाढ़ में ध्वस्त हो गए। सीतामढ़ी, मधेपुरा और गोपालगंज जिलों में घरों की क्षति सबसे कम हुई थी।

(III) मानव और मवेशियों के जीवन की क्षति:— बाढ़ अचानक आती है कभी-कभी तो लोग अपने घरों में सोते रहते हैं और तटबंधों आदि के टूटने से एकाएक बाढ़ आ जाती है। पानी के तेज धारा में कई लोग और उनके मवेशी बहा लिए जाती हैं। वर्ष 1987 में बिहार में बाढ़ से 1283 मनुष्य और 5000 से अधिक पशु मारे गए थे। वर्ष 2003 में बाढ़ से मृत मनुष्यों की

संख्या 251 और मृत पशुओं की संख्या 108 थी। अकेले भागलपुर जिला में 80 पशु मारे गये थे। समस्तीपुर और अररिया जिला में 8-8 पशु मारे गये थे। सारी परिसम्पतियों में मानव सबसे बहुमूल्य होता है। वर्ष 2003 में मुजफ्फरपुर, पश्चिमी चम्पारण, शिवहर, गोपालगंज, दरभंगा, समस्तीपुर और भागलपुर जिला में से प्रत्येक में 15-30 मनुष्य मारे गए थे। बाढ़ से प्रभावित सभी 24 जिलों में सिर्फ बक्सर को छोड़कर कोई न कोई मनुष्य अवश्य ही बाढ़ का शिकार हुआ था। 7 जून 2004 की रात में बाढ़ से बागमती की अचानक हुई तेज धारा में 50 लोग बह गये और 28 लोगों की मौत हो गयी थी। बाढ़ प्रभावित सभी जिलों में इस तरह बाढ़ से मौत हो गयी थी। बाढ़ प्रभावित सभी जिलों में इस तरह बाढ़ से मौत होता रहता है।

(iv) **सार्वजनिक परिसम्पति की क्षति :-** बाढ़ से सड़कों, पुलों, विद्यालयों और अस्पतालों जैसे सार्वजनिक सम्पति नष्ट हो जाती है या उनकी बाढ़ से नष्ट हो गयी थी। वर्ष 2003 के आंकड़ों के अनुसार 13.35 करोड़ रुपये की सार्वजनिक सम्पति नष्ट हो गयी थी। इस तरह की सम्पति सबसे अधिक क्षति सीतामढ़ी, समस्तीपुर, अररिया और कटिहार जिलों में हुई। बिहार के शेष 17 जिलों में इस प्रकार की सम्पति

का नुकसान बहुत कम हुआ था।

(V) कुल क्षति :- सिंचाई विभाग बिहार सरकार से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार वर्ष 1987 की बाढ़ में कुल क्षति का आकलन 1212 करोड़ रुपये किया गया था। गंगा बाढ़ नियंत्रण आयोग पटना के रिपोर्ट के अनुसार फसलों, घरों और सार्वजनिक सम्पतियों की कुल क्षति वर्ष 2003 में 96.33 करोड़ रुपये हुई। सबसे अधिक क्षति जिन जिलों में हुई उनके नाम हैं समस्तीपुर, पश्चिमी चम्पारण, कटिहार, मुजफ्फरपुर और भागलपुर। कोसी नदी के दोनों तटबंधों के बीच स्थित मधेपुरा और पूर्णिया जिलों में सबसे कम क्षति हुई थी।

2020-7-28 14:34